M.A. II Sem - IV

Subject Code : History EC. 3(C)

# भारतीय कृषि के वाणिज्यीकरण

19 वीं शताब्दी के अंतिम चतुर्थांश में कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन होने लगे थे, जो 1900 और 1914 के बीच और अधिक स्पष्ट हो गए। कृषि-भूमि का बहुत बड़ा हिस्सा व्यापार के लिए आवश्यक कृषि वस्तुओं के उत्पादन में लगा दिया गया। कपास, पटसन, तेलहन, चावल और गेहूँ का उत्पादन केवल गृह बाजार के लिए नहीं वरन् विदेशी बाजार के लिए भी होने लगा था। भारतीय कृषि में परिवर्तन की इस प्रवृत्ति को "कृषि का वाणिज्यीकरण" कहा गया। वस्तुतः 'कृषि का वाणिज्यीकरण' दो अर्थों में प्रयुक्त किया गया। पहला तो यह कि कृषि वस्तुओं का उत्पादन वाणिज्य के दृष्टिकोण से किया जाता और दूसरे चावल गेहूँ आदि खाद्य फसलों के अतिरिक्त कपास, पटसन आदि अ-खाद्य फसलों (non-food crops) अथवा वाणिज्य फसलों की कृषि में वृद्धि। वाणिज्यीकरण से सरकार और ठेकेदारों को लाभ हुआ, भारतीय कृषकों के लिए यह आर्थिक मजबूरी थी।

कृषि के वाणिज्यकरण के कई कारण थे —

P.T.O

# भारतीय कृषि का वाणिज्यीकरण

लार्ड विलियम बेंटिक और लार्ड डलहौजी के काल में परिवहनों एवं संचार के साधनों का तीव्र गति से विकास हुआ, इससे वाणिज्यीकरण की गति को बढ़ा दी।

कृषि बाजार का स्वरूप बदलने लगा। पहले कृषि बाजार का स्वरूप स्थानीय था, अब वह अन्तर्राष्ट्रीय हो गया।

ब्रिटिश सरकार की वाणिज्यीकरण की नीति कृषि वस्तुओं एवं कच्चे माल का निर्यातक एवं निर्मित वस्तुओं का आयातक बनाने की थी।

भारत का विदेशी व्यापार की व्यापकता बढ़ने लगी। वस्तुओं का निर्यात सुरक्षा पूर्वक होने लगा।

उद्योगपतियों ने ब्रिटिश सरकार की सहायता से कृषि में अपनी रुचि दिखलाना प्रारंभ किया अब ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे मालों पर विशेष दृष्टि रखी गई।

अब वस्तु-विनिमय प्रणाली के स्थान पर मौद्रिक प्रणाली प्रारंभ हुई। इसने भी कृषि के वाणिज्यीकरण को सहायता दी।

सारे देश में (भारत) एक रूप टंकण (coinage) की व्यवस्था की गई। इससे वस्तु विनिमय की कठिनाईयां दूर हुई।

P.T.O

# भारतीय कृषि का वाणिज्यीकरण

इस समय सोने चाँदी का आयात अधिक होने लगा, क्योंकि कैलिफोर्निया तथा आस्ट्रेलिया में सोने की खान और मैक्सिको में चांदी की खान खोज निकाली गई। इसके कारण तथा वाणिज्य के विकास के कारण भारतीय कृषि वस्तुओं की कीमत में काफी वृद्धि हुई थी। मूल्य वृद्धि के कारण कृषकों को कृषि का वाणिज्यीकरण करने के लिए बल मिला।

लार्ड कार्नवालिस तथा इसके बाद के शासकों ने जमींदारी प्रथा तथा भूमि-व्यवस्था में सुधार लाए, भूराजस्व में स्थायित्व लाने का प्रयास किया गया, भारतीय कृषकों को अपनी भूमि पर स्थायित्व का अधिकार मिला, भूमि को हस्तांतरित करने का अधिकार भी मिला। कृषि में भूमि स्वामी बन जाने एवं कृषि से अधिक से अधिक लाभ कमाने की लालसा जगी। अतः वे निश्चिंत होकर कृषि कार्य की ओर उन्मुख हुए।

सन् 1857 के विद्रोह के पश्चात् शासन का केन्द्रीकरण हो गया। महारानी विक्टोरिया ने अपनी घोषणा में भारतीय हितों की रक्षा

P. T.O

## भारतीय कृषि का वाणिज्यीकरण

की बात कही। किसानों के हित में इसमें शामिल थी। कृषकों ने महाजनी की शोषण और शासन के केन्द्रीकरण का दूसरा लाभ उठाया।

अमेरिकी गृह युद्ध (1861-65) ने भारतीय वाणिज्यीकरण को प्रोत्साहित किया। इंगलैंड अपने उद्योगों के लिए कपास अमेरिका से मंगवाता था लेकिन गृह युद्ध के काल में यह संभव नहीं था। इंगलैंड अब भारत से कपास मंगाना आरंभ किया।

सरकार भी वैज्ञानिक ढंग से कृषि में सुधार लाना प्रारंभ किया। सिंचाई की व्यवस्था में सुधार लाया गया। पंजाब गेहूं का भंडार बना। 1909-1914 के बीच कृषि के विकास के लिए सरकार ने कई योजनाएं पारित किया। इससे कृषि में उन्नति हुई और कृषक नकदी फसल पैदा करने की ओर उत्साहित हुए।

कारखाना उद्योगों जैसे सूती वस्त्र, पटसन आदि कारखाना उद्योगों का विकास हुआ। इनके लिए भी कच्चे माल की आवश्यकता थी। इस कारण भी कृषि का वाणिज्यीकरण हुआ।

P.T.O.

## भारतीय कृषि का वाणिज्यकरण

विश्व प्रसिद्ध स्वेज नहर (1869) के खुल जाने से भारतीय विदेशी व्यापार में वृद्धि हुई और भारतीय वस्तुओं का मूल्य भी बढ़ गया। इसने भी कृषि के व्यवसायीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस प्रकार उपरोक्त महत्वपूर्ण कारकों ने कृषि के वाणिज्यीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

कृषि के इतिहास में वाणिज्यीकरण के महत्वपूर्ण प्रभाव भी दृष्टिगोचर हुए। जैसे:

वाणिज्यीकरण के फलस्वरूप कृषि की प्रकृति बदल गई। कृषि का स्वरूप पूंजीवादी अथवा अर्द्धपूंजीवादी में परिवर्तित हो गई। अब कृषक उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन करने लगे, जिसके लिए उनकी भूमि उपयुक्त थी; शेष के लिए वे अन्य कृषकों तथा कृषि क्षेत्रों पर निर्भर रहने लगे।

अधिकाधिक लाभ पाने के उद्देश्य से कृषि में विशिष्टीकरण आया। पंजाब में गेहूँ, बंगाल में पटसन, बम्बई, मध्यप्रदेश और बरार में कपास की खेती होने लगी।

भारतवर्ष कच्चे माल का प्रमुख निर्यातक देश बन गया। पटसन व्यापार में

P.T.O.

## कृषि का वाणिज्यीकरण

इसे एकाधिकार प्राप्त हुआ जबकि कपास, तेलहन, चावल, गेहूँ आदि में विशिष्ट स्थान प्राप्त हुए।

कृषि भूमि में अधिक मात्रा में औद्योगिक और व्यापारिक फसलों की खेती की जाने लगी। खाद्यान्न फसलों की खेती पीछे छूट गई। 1931 ई० के बाद स्थिति इतनी संकटपूर्ण हो गई कि खाद्यान्नों के लिए दूसरे देशों पर आश्रित होना पड़ा।

परिवहन सुविधाओं के विस्तार तथा कृषि के वाणिज्यीकरण से होने वाले अधिक लाभ के कारण जनसंख्या में वृद्धि हुई। इससे कृषि पर जनता का बोझ बढ़ गया, क्योंकि उन्नतशील भारतीय उद्योगों का विनाश हो चुका था।

इस अवधि में अकाल पड़ने लगे। इस खेती ने अकाल और महामारी को जन्म दिया। सन् 1800 से 1900 ई० के बीच अकाल से मरने वालों की संख्या 1,50,00,000 हो गई। यद्यपि कृषि कृषक आमदनी में सक्षम थे, लेकिन अकाल के प्रकोपों का सामना करने में वे असमर्थ थे, क्योंकि वे उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन करते थे जिनका बाजार में मूल्य अधिक होता था। फलतः खाद्यान्नों में कमी आई, पशुओं के चारागाह खत्म हो गए। संकट से उबरने के लिए कृषकों तथा अन्य लोगों ने ऋण लिए

P.T.O

## कृषि का वाणिज्यीकरण

और ऋण की अदायगी के लिए एक दबाव पड़ा तब उन्होंने अपनी भूमि बेच डाली। अधिकांश किसान मजदूर बन गए। 19वीं शताब्दी के आठवें दशक में किसान बुरी तरह ऋणग्रस्त हो गए थे।

कृषि के वाणिज्यीकरण के फलस्वरूप किसान नकदी फसल की ओर आकृष्ट होते थे, क्योंकि इससे अच्छी आय होती थी। अब किसानों को आवश्यकता ही नहीं बल्कि फिजूल खर्ची की आदत लग गई। खर्च की अधिकता ने उन्हें बेईमान सेठ-साहूकारों के चंगुल में फंसा दिया।

कृषि के वाणिज्यीकरण ने बाजार में एक नए मध्यम वर्ग को जन्म दिया। ये कृषि बाजार के संगठन के दोषों से परिचित थे। इससे लाभ उठाकर के व्यापार में गुनाफा कमाने लगे। अब उत्पादक निर्धन हो गए और बाजार नियंत्रक सम्पन्न होते गए।

इस प्रकार कृषि के वाणिज्यीकरण से किसानों को कुछ नकद आय अवश्य हुई, किन्तु अन्तोगत्वा इससे नुकसान ही हुआ। कृषि की उपेक्षा हुई, देश की निर्धनता बढ़ी, किसान ऋणग्रस्त हुए, अकाल ने लोगों को मृत्यु तक पहुंचा दिया।